जल ही जीवन है

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय राजस्थान

सम्पूर्ण पृथ्वी पर जल बहुत बड़ी मात्रा में उपलब्ध है। यह जल समुद्रों में खारे पानी के रूप में है। हमारे शरीर में भी जल की अधिक मात्रा है। इसीलिए कहा गया है कि जल ही जीवन है। यदि किसी को भोजन दे दिया जाये और जल नहीं दिया जाये तो वह व्यक्ति जल के बिना परेशान हो जायेगा। अतः जल शरीर के लिए बहुत आवश्यक है। जल मानव और प्रकृति सबके लिए आवश्यक हैं। जल के बिना जीवन सम्भव नहीं है। जहां पर जल नहीं है वहां की धरती मरूस्थल हो जाती है। सहारा का मरूस्थल प्रसिद्ध है। यहां पर बरसात नहीं होती। बरसात नहीं होने से जमीन मरूस्थल के रूप में बदल गयी है। पेड़–पौधों के विकास के लिए जल की आवश्यकता होती है। जल के बिना पेड़–पौधे सूख जाते हैं। प्रकृति को हरा–भरा रखने के लिए जल जीवनदायक होता है। जितने भी पशु–पक्षी है सभी को जीवन धारण करने के लिए जल की आवश्यकता होती है। गाय, बैल, भैंस और अन्य पशुओं को जल की बहुत आवश्यकता होती है। गाय, भैंस आदि जीव जल से ही सिंचन पाकर दूध देते हैं। हमारे देश में जल को देवता माना गया है। यहां पर पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश की पूजा होती है। वैदिककाल से लेकर आज तक यह पूजा समान रूप से की जा रही है। मानव को जीवन धारण करने के लिए शुद्ध जल की आवश्यकता होती है। यह जल पृथ्वी की सतह में स्थित रहता है। नलकूपों के द्वारा, नलों के द्वारा बाहर निकाल कर इसका सेवन किया जाता है। नहरों का जल, बांधों का जल शुद्ध करके पीने योग्य बनाकर नगरों और गांवों में वितरित किया जाता है जिससे लोग अपना जीवनयापन करते हैं। भारत गांवों का देश है। गांवों में कृषि कार्य के लिए जल की आवश्यकता होती है। बिना जल के कृषि सम्भव नहीं है। बड़े–बड़े बांधों को बनाकर जल को संरक्षित किया जाता है और आवश्यकता पड़ने पर नहरों और नालों के द्वारा सिंचाई के लिए वितरित किया जाता है। जल का पोषण पाकर अनाज उत्पन्न होता है और अनाज से मनुष्य का पोषण होता है। जीवन का अस्तित्व प्राकृतिक तत्त्वों

के संतुलन पर टिका है। जिस वातावरण से पृथ्वी घिरी है उस वातावरण में प्रत्येक तत्त्व एक अनुपात में है। यदि इस अनुपात में एक सीमा से अधिक अन्तर पड़ जाये तो जीवन समाप्त भी हो सकता है।

पर्यावरण के निर्माण में पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश वनस्पति, मानव तथा मानवेतर सभी प्राणियों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। पर्यावरण की सुरक्षा के लिये केवल इतना समझना आवश्यक नहीं है कि प्रकृति हमारे लिये उपयोगी है। समझना यह है कि हम प्रकृति के एक अवयव हैं। जिस प्रकार हममें जीवन है उसी प्रकार प्रकृति के प्रत्येक कण–कण में जीवन है। मानव प्रकृति की उपेक्षा करके अपने अस्तित्त्व को नहीं बचा सकता। यदि उसे अपने अस्तित्त्व की रक्षा करना है तो जीवन के हर रूप को पशु–पक्षी, पेड़–पौधे, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश तक को सुरक्षित रखना होगा। इन पांचों तत्त्वों की सुरक्षा और संरक्षा मनुष्य पर निर्भर है। प्रकृति ने मानव को उपभोग के लिये एक अक्षय खजाना दिया है। यदि इसका सदुपयोग किया जाय तो यह समाप्त होने वाला नहीं है, किन्तु यदि इन तत्त्वों का दुरुपयोग किया जाएगा तो समाप्त भी हो जायेगा और मानव के अस्तित्त्व के लिये संकट भी उपस्थित हो जायेगा। इसलिये सुरक्षित पर्यावरण मानव के अस्तित्त्व के लिये आवश्यक है। गीता में पंचमहाभूतों पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश को भगवान् कृष्ण ने अपनी प्रकृति कहा है। ये तत्त्व मानव के लिए उतने ही पूजनीय हैं जितने की ईश्वर। इनकी पूजा करना ईश्वर की पूजा करना है। यही कारण है कि वृक्षों में देवत्व का आरोप करके हमारे देश में वृक्षों की पूजा की जाती है। उपभोक्तावादी संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण मनुष्य अपने पुराने आदर्शों और परम्पराओं को भूलकर प्राकृतिक तत्त्वों का अन्धाधुन्ध दोहन कर रहा है। आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का उपयोग मानव के अनैतिक आचरण का परिणाम है। हम किसी भी तरह से पर्यावरण के घटकों के पदार्थों से छेड़खानी करते हैं तो उसके दुष्परिणाम भुगतने को तैयार रहना पड़ेगा। चाहे एक इन्द्रिय जीव हो या द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय जीव हो, यदि इनमें से किसी एक का भी विनाश होता है तो हमारी खाद्य शृंखला विघटित हो जायेगी, जिससे हमारा इकोसिस्टम बिगड़ जायेगा। एक उदाहरण से समझते हैं, जैसे मृत पशुओं को गिद्ध, चील आदि खाते हैं, जिससे हमारा पर्यावरण प्रदूषित नहीं होता लेकिन वर्तमान समय में देखते हैं

कि गिद्ध, चील आदि नहीं दिखाई देते तब मृत पशुओं का क्या किया जाये? और इन मृत पशुओं से विभिन्न प्रकार के रोगादि फैल रहे हैं, वातावरण प्रदूषित हो रहा है। इसीलिए वातावरण को स्वच्छ रखना है तो हमें प्रत्येक प्रकार के जीवों की रक्षा करनी होगी।

गांव से लेकर महानगारों में जल, पानी की विकट समस्या, बिजली, प्रकाश की समस्या, रसोई गैस की समस्या, साग–सब्जी, वनस्पति की समस्या, बाढ़ की समस्या, भूकम्प, सुनामी की समस्या इत्यादि–ये सभी समस्याएं मनुष्य द्वारा ही सृजित हैं और इनका समाधान भी मनुष्य कर सकता है। उदाहरण से स्पष्ट करना चाहता हूं, जैसे मनुष्य को आवश्यक है–नहाना, कपड़े धोना आदि मनुष्य को नहाने के लिए पानी चाहिए मान लो दो बाल्टी परन्तु यदि दो बाल्टी की जगह तीन, चार बाल्टी पानी गिराये तो इससे क्या होगा? पानी की कमी आयेगी। आज पर्यावरण असन्तुलित हो रहा है। अतः जल ही जीवन है।